# सीतापुर जनपद व निकटवर्ती क्षेत्रों की अवधी काव्य–परम्परा का परिचयात्मक अध्ययन

**डॉ0 प्रीति**

हिन्दी विभाग
हिन्दू कन्या महाविद्यालय,
सीतापुर–261001 (उ0प्र0)

अवधी विभाषा का जन्म हिन्दी भाषा के साथ, तान्त्रिक और योगमार्गी बौद्धों की रचनाओं से हुआ है। डॉ0 श्याम सुन्दर दास पूर्वी हिन्दी (अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी) का उद्‌भव अर्द्धमागधी (प्राकृत और अपभ्रंश) से मानते हैं।

हिन्दी के प्रथम कवि सरहपा के रचनाकाल से ही अवधी का निर्माण होना प्रारम्भ हो गया था। अवधी का अंकुरण उपर्युक्त आलोक में यद्यपि आठवीं शती से प्रारम्भ हुआ, किन्तु समुचित विकास में शिलांकित कृति 'राउरबेल', गोरखबानी, (नाथ साहित्य) उक्ति–व्यक्ति प्रकरण, रासो–साहित्य (बीसलदेव रासो तथा 'आल्ह–खण्ड') और निर्गुण सन्त कवियों के कतिपय काव्य की प्रभावी भूमिका रही। इस प्रकार अवधी काव्य का प्रौढ़ स्वरूप चौंदहवीं शताब्दी में प्रकट हुआ।

अवधी के निर्माण काल की अवधि सन् 1379 ई0 तक उजागर है। अवधी के अंकुरण काल के परिप्रेक्ष्य में विद्वानों के भिन्न मत प्राप्त होते हैं, जिनके अनुसार प्रायः पहली ई0 से 500 ई0 तक की परिवर्तित और विकसित बोलचाल की भाषा को प्राकृत नाम से ग्रहण किया जाता है। इस काल में अनेक क्षेत्रीय बोलियाँ बोली जाती थीं। विद्वानों ने इनमें शौरसेनी, पैशाची, ब्राचड़, महाराष्ट्री, मागधी और अर्द्धमागधी को मुख्य माना है। अर्द्धमागधी का विकसति रूप पूर्वी–हिन्दी है, जिसकी तीन विभाषाएं क्रमशः अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी हैं। इस प्रकार अवधी के स्पष्ट चिह्न हिन्दी के ''अपभ्रंश–काल'' से प्रकट हैं। अपभ्रंश काल ईसा की पाँचवी शती से दसवीं शताब्दी तक है। इस काल के प्रारम्भिक सिद्ध–साहित्य में अवधी शब्दों और अवधी–क्रियापदों की उपस्थिति प्राप्त होने लगती है।

हिन्दी भाषा व साहित्य को समृद्ध करने में विभाषा अवधी का प्रारम्भिक और महत्त्वपूर्ण योगदान है। इसका प्रादुर्भाव हिन्दी की अन्य विभाषाओं के समकक्ष है। अर्द्धमागधी (प्राकृत और अपभ्रंश) के अतिरिक्त अवधी ने संस्कृत और पालि शब्दों का सीधे अवधीकरण कर उसे अपनाया है। अवहट्‌ट की सभी रचनाओं में अवधी के रूप विद्यमान हैं। एतत् उसका अस्तित्व आठवीं शताब्दी से सिद्ध है यथा हिन्दी के प्रायः स्वीकृती आदि कवि 'सरहपा' (रचनाकार सन् 769 ई0) की एक काव्य पंक्ति है –

''अपणे अपा बुझतु निअ–मण।''

इसमें क्रियावची शब्द 'बुझतु' अवधी सूचक है तथा विशेषण ''निउ'' शब्द भी अवधी में क्रियावाची ''निअराई'' रूप से प्राप्त होता है। (जैसे '– ''आगे चले बहुरि रघुराई। ऋष्यमूक पर्वत निअराई।।''–राम रचितमानस)''। निअ शब्द संस्कृत के ''निज'' शब्द (अपना अर्थ में व्यक्त) से प्राप्त होकर अवधी के क्रियावाची शब्द ''निअराई'' (अपना समीप होना अर्थ) में व्यवहृत हुआ है। कहने का आशय यह है कि अवधी लोकभाषा सिद्धों, पूरब के सन्तों और नाथ सम्प्रदाय के गोरखनाथ की वाणी में न्यूनाधिक व्यवहृत हुई तथा उनके आध्यात्मिक काव्य की भाषा बनी। अवध प्रान्त में नाथ पन्थियों और सूफी सन्तों के मतों ने मध्यकालीन अवधी काव्य पर व्यापक प्रभाव डाला। फलतः हिन्दी और हिन्दी की अन्य विभाषाओं की अपेक्षा अवधी के सन्त और भक्त कवियों ने तत्कालीन प्रेरणा को अधिक सक्रियता से ग्रहण किया। इस प्रकार मुक्तक सन्त काव्य और प्रबन्ध विधान में प्रेमाख्यान व सगुण भक्ति काव्य, अवधी में प्रचुरता से लिखे गये एतत् अवधी, प्रबन्ध काव्यों की प्रमुख भाषा ही हो गई। जिसका प्राधान्य हिन्दी के रीतिकाल (1843 ई0) तक रहा। हिन्दी

का प्रारम्भिक छन्द–दोहा–चौपाई, सोरठा, बरवै, कवित्त आदि भी इस काल में खड़ी बोली हिन्दी में लिखे गये। तथापि विश्व प्रसिद्ध अवधी भाषा और उसके परम्परागत छन्दों का आकर्षण आज भी विद्यमान है। आधुनिक कालीन अवधी भाषा के अनेक रामकाव्य और कृष्ण काव्य इसके उदाहरण है। यहाँ तक कि इनके अतिरिक्त भगवती दुर्गा, शिव, भगवान बुद्ध, स्वामी दयानन्द, नूरजहाँ, ध्रुव, महात्मा गाँधी, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, हनुमान, अहल्या, अर्जुन, बभुवाहन, ईसा आदि पौराणिक एवं ऐतिहासिक व्यक्तित्वों पर केन्द्रित अवधी के अनेक आधुनिक कालीन प्रबन्ध काव्य हैं। जो अवधी में और श्री रामचरित मानस की शैली में लिखे गये हैं।

अवधी भाषा के कई भेद कहे जाते हैं – पूर्वी अवधी, पश्चिमी अवधी तथा मध्य की बैसवाड़ी अवधी जो पश्चिमी अवधी का ही एक रूप है।

प्रस्तुत शोध पत्र में आधुनिक काल में सीतापुर जनपद व निकटवर्ती क्षेत्रों के जिन कवियों ने अवधी साहित्य का सृजन करने का प्रयास किया, उन कवियों का परिचयात्मक अध्ययन किया गया है।

## ब्रज भूषण त्रिपाठी 'ब्रजेश'–

ब्रजेश जी का जन्म सन् 1895 ई0 में ग्राम दरियापुर, जिला सीतापुर में हुआ था। आप स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के कारण आप कई बार जेल भी गये। सर्वप्रथम ठेठ ग्रामीण अवधी की परम्परा–मुक्तक अभिनव शैली में काव्य रचना करने का श्रेय आपको ही है। आपने अवधी में काव्य ग्रन्थों के साथ–साथ कुछ लम्बी कविताओं का सृजन किया, जिसमें 'सती पियरिया' 'ब्रजेश' जी की 150 पंक्तियों की लम्बी रचना है, जो सन 1929 ई0 में 'माधुरी' के एक अंक में प्रकाशित हुई, जिसे एक सुन्दर निबन्ध–काव्य कहा जा सकता है। यह एक सांस्कृतिक रचना है।

आपने 'काव्य कोकिल', 'अपन्न कथा', 'दुःख गाथा', 'विजय' आदि काव्य–ग्रन्थों का सृजन किया। आपने अवधी में मधुर ग्राम गीतों के साथ सुन्दर घनाक्षरी की भी रचना की। सती पियरिया, कलकत्ता कांग्रेस, स्वानचिरई भारत तथा अल्लहड़ पड़ोसी आदि आपकी अवधी की प्रसिद्ध रचनाएं हैं। कवि द्वारा रचित स्वानचिरई भारत की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–

भारत ऐसि स्वान चिरई की दुवौ टांग का,
हाय रे ! बेदरदी चिड़ीमारु एकु तोरे देति।
पखनन नोचि–नोचि ऐसी वैसी फेंके देति,
लोहे क्यार किल्ला लिहे आँखि दुवौं फोरे देति।
चेउं–चेउं करति चिरैय्या च्वांच बाय–बाय,
मुला ऊकसाई बार–बार झकझोरे देति।
टाँग–पूँछ तोरे देति पेट हू क फोरे देति,
दौरे हो 'ब्रजेश' नहीं घींच हू मरोरे देति।'

## बलभद्र प्रसाद दीक्षित 'पढ़ीस'–

पढ़ीस जी का जन्म सन् 1898 ई0 में सीतापुर जिले के ग्राम अम्बरपुर में हुआ था। आपके पिता का नाम पं0 कृष्ण कुमार दीक्षित था। पढ़ीस जी ने सिधौली के पास कसमण्डा रियासत से इण्टरमीडिएट पास करने के उपरान्त कुछ दिनों तक राज–दरबार के बच्चों को पढ़ाने का कार्य किया। ''ठेठ ग्रामीण अवधी

की नवीन भाषा–शैली में काव्य–रचना की लीक उभारने का मुख्य श्रेय 'पढ़ीस' जी को ही दिया जाता है। आप अवधी के युग–प्रवर्तक कवि स्वीकार किये जाते हैं। आप एक सच्चे देशभक्त तथा जनवादी कवि थे। आकाशवाणी–लखनऊ की सेवा करते हुए उसमें 'अवधी काव्य स्तम्भ' को स्थापित करने का श्रेय आपको ही जाता है। आपका गोलोकवास सन् 1942 ई0 में हुआ था।

आपने अवधी भाषा में जिन ग्रन्थों की रचना की, वे इस प्रकार हैं – 'चकल्लस', जिसका प्रकाशन सन् 1933 ई0 में हुआ। 'सात समुद्र पार', 'बौछार', 'उड़ल खटोला', 'हरामखोर' तथा 'हर–हर महादेव' आदि।

पढ़ीस जी के काव्य में राष्ट्रीय भावना के साथ–साथ रहस्यवाद के भी दर्शन होते हैं। इन्हीं भावोंको व्यक्त करती हुयी 'महतारी' शीर्षक कविता की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–

तुम रूप–रतन की राशि, रुपहली किरनन ऊपर बिहँसि–बिहँसि।
हीरा मोतिन के थार भरे, बिथरउती हउ हमरे ऊपर।
हम जानित हइ तुमको आहिउ, पहिचानित हइ का लाई हउ।
छकि जाइति हइ छवि–छाप देखि थकि जाइति हइ उठतइ ऊपर।
तुम जउनि अखण्ड जोति आहिउ जगु जगमग–जगमग करती।
तुम सात समुन्दर पार बसी रहती हउ हमरी आँखिन पर।
तुमरे आँचर का छोरु छबीला तीन लोक तकु छहरि रहा।
तुम महरि–महरि महकती रहिउ, जल–थल पर पल–पल के ऊपर।

## राष्ट्रकवि बंशीधर शुक्ल–

अवधी साहित्य सम्राट की संज्ञा से विभूषित बंशीधर शुक्ल जी का जन्म सन् 1904 ई0 में बसन्त पंचमी के दिन मन्यौरा ग्राम में, जिला लखीमपुर–खीरी में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री छेदीलाल शुक्ल था, जो स्वयं एक आशु कवि थे। आप दर्जा दोम पास कर एक वर्ष तक संस्कृत विद्यालय–लखीमपुर में प्रथमा पढ़े, पर किसी कारणवश आपकी पढाई आगे न चल सकी, लेकिन आपने स्वाध्याय से हिन्दी, उर्दू तथा संस्कृत का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। आपने जीवन भर कृषक का कार्य किया। पहले आपने छोटी–छोटी पुस्तकों का व्यापार किया। किद्दा मिल में भी आपने कुछ समय तक नौकरी की तथा कई वर्षों तक आपने लखनऊ–आकाशवाणी में भी कार्य किया। अन्त में आपने पुनः कृषि कार्य किया। सन् 1921 ई0 में आप गणेश शंकर विद्यार्थी के सम्पर्क में आये और स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़े। आपने अपना सम्पूर्ण जीवन देश की सेवा में व्यतीत किया। स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने के कारण आपको कई बार जेल भी जाना पड़ा। आप सन् 1957 ई0 से 1962 ई0 तक विधान सभा लखनऊ में विधायक रहे। आपने 27 वर्ष की अवस्था से कविता लिखना प्रारम्भ किया। पहले आप श्रृंगार रस के छन्द लिखा करते थे, परन्तु बाद में राष्ट्र सम्बन्धी कविताओं का सृजन किया। आपने मुख्य रूप से अपना सम्पूर्ण साहित्य अवधी भाषा में लिखा। आपको सन् 1953 में अखिल भारतीय साहित्य–परिषद, लखीमपुर–खीरी द्वारा सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त हिन्दी साहित्य सम्मेलन–प्रयाग द्वारा, अवध एकादमी बहराइच द्वारा, मन्यौरा में ही राज्य सरकार उत्तर प्रदेश द्वारा भी पुरस्कृत किया गया तथा सन् 1978 ई0 में हिन्दी संस्थान उत्तर प्रदेश, लखनऊ द्वारा 'जायसी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। आपको जन कवि, राष्ट्रकवि तथा अवधी सम्राट के नाम से जाना जाता है।

'कृष्ण–वन्दना', 'शंकर वन्दना', 'लीडराबाद', 'उठ जाग मुसाफिर भोर भई', 'राम मड़इया' आदि आपकी प्रमुख रचनाएं हैं।

आपको ग्राम और ग्रामीणों से अत्यन्त लगाव था। आपके काव्य–साहित्य में किसान की सम्पूर्ण स्थितियाँ देखने को मिलती हैं। आपके काव्य में किसान के अस्तित्त्व पर सभी प्राकृतिक तत्त्वों की स्थिति, रक्षा और निर्वाह अवलम्बित हैं –

जेहि के आँसुन ते मेघ बने, आहन ते रंगिगा आसमान,

अरमानन जरे अंसुमान, देही निचोरि सागर मोटान।

हड्डिन ते बनिगे नगर–गाँव, साँसन ते निकरइ मलय पवन।

तप–त्यागु देखि धरती फूली, मुँह बन्द किहे बोला कन–कन।

## लक्ष्मन प्रसाद 'मित्र'–

'मित्र' जी का जन्म सन् 1906 ई0 में सीतापुर जनपद के ग्राम हिंडौरा में हुआ था, जो गोमती और सँराय नदी के संगम पर बसा है। आपके पिता का नाम श्री रामचरण वैश्य था। आपने साहित्यिक जीवन का प्रारम्भ वर्ष सन् 1925 ई0 में प्रारम्भ किया। आप एक श्रेष्ठ कवि तथा कुशल नाटककार थे। आप कवि सम्मेलन के मंचों पर तो नहीं दिखाई दिये, परन्तु सामयिक पत्रिका में आपकी कविताएं निरन्तर छपती रहीं। 'सुकवि' नामक पत्रिका का शायद ही कोई अंक हो, जो आपकी कविता के बिना छपा हो। आपने अपनी भाषा में पश्चिमी टकसाली अवधी का प्रयोग किया है। आपका बिम्ब विधान लाक्षणिक है, जो उपमानों और लोक–जीवन के प्रतीकों से सुसज्जित है। आपकी कविताओं में देश–प्रेम, सामाजिक और राजनीतिक कुरीतियों, गाँवों के प्राकृतिक चित्रों तथा हास्य–व्यंग्य की छटा दृष्टिगत होती है। आपको हिन्दी के साथ–साथ उर्दू और फारसी का भी अच्छा ज्ञान था। आपका गोलोक वास सन् 1988 ई0 में हुआ।

अवधी गद्य में आपने आठ एकांकियों का सृजन किया। काव्य के रूप में 'बरसाती मेढक' आपका प्रसिद्ध अवधी काव्य है, जिसका प्रकाशन 1966 में हुआ। आपने सन् 1928 ई0 से सन् 1966 ई0 तक अवधी में कविताएं लिखीं। 'सतनजा' नामक कविता आधुनिक समय की अमूल्य धरोहर है। 'तुइ को आही रे' नामक शीर्षक पर लिखी कविता को भी अधिक सराहा गया, जिसकी पंक्तियाँ निम्नवत् हैं –

जुम्मन की महजिद मां घुसि कै ऐसी वैसी ताका,

मौके ते गिरिजा घर पावा हिम्मति कै कै झाँका।

ठाकुर द्वारा और सिवाला नीकी तना निहारा,

सबमा राम खुदा यीशू का हिरि–फिरि वहै नजारा।

ओ पण्डित–पादरी–मौलवी का बस चाही रे,

हमरे मनमा भेद भरइया 'तुम को आही रे'।

## रामदत्त तिवारी 'कुलीन' –

आपका जन्म सन् 1907 ई0 में सीतापुर जनपद के ग्राम रौसिंहपुर में हुआ था। आपने प्रारम्भिक शिक्षा अपने ग्राम में ही सम्पन्न की। वर्ष 1925 ई0 में आपने म्यूनिस्पल इण्टर कॉलेज–सीतापुर से हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके उपरान्त आप गन्ना विभाग में सुपरवाइजर के पद पर नियुक्त हुए। वर्ष

1966 ई0 में आप सुपरवाइजर के पद से सेवानिवृत्त हो गये। सेवानिवृत्त होने के पश्चात् आप सारा समय साहित्य साधना में रत रहने लगे। आपकी अनेक कविताएं आकाशवाणी से प्रसारित हो चुकी हैं। आपके श्रेष्ठ काव्य–सृजन के लिये समय–समय पर आपको साहित्यिक संस्थाओं के द्वारा सम्मानित भी किया जा चुका है। आपको हिन्दी सभा–सीतापुर ने जनवरी 1988 ई0 में, ग्राम्याँचल हिन्दी परिषद–मिश्रिख ने अक्टूबर 1980 ई0 में, वंशीधर शुक्ल स्मारक व साहित्य प्रकाशक समिति–लखीमपुर ने फरवरी 1986 में तथा सर्वमंगल सेवा संस्थान–लखनऊ ने 15 अगस्त 1987 में आपका अभिनन्दन करके आपको गौरव प्रदान किया। आपने अपना उपनाम कान्यकुब्ज ब्राह्मणों में फैले हुए तथाकथित कुलीनता के पाखण्ड पर व्यंग्य स्वरूप 'कुलीन' रखा।

आपने लगभग 10 पुस्तकों की रचना की, जिनमें से 'कुलीनता' का नंगा नाच', 'नारदमोह', कागभुसुंड', ' गरुण संवाद', ' दुर्गा दर्शन , 'नारान्तक कथा', 'मेघनाद–वध', 'अंगद रावण संवाद', 'गुदगुदी', 'सत्यनारायण कथा', षष्टाध्यायी' आदि हैं।

आपने स्फुट कविताओं का भी सृजन किया है। आधुनिक कवियों पर व्यंग्य करते हुए आप अपनी एक कविता में अपने भावों को व्यक्त करते हुए लिखते हैं –

कविता वहै है अंग–अंग फरकावै जौनि,
मन मा उमंग भरै हिम्मति दोहरिया।
साथ–साथ जुग के बदलि गा यहू का ढंगु,
लोचदार सैली स्वादु जैसे लोन बरिया।
ढ्वालक बजाइ कै मधुर धुनि गावै लाग,
भारत खाइ जैहैं सरमाइकै मेहरिया।
सिंहनाद तनिकउ नजाकति की बोली बोलि,
कवि लोग गावै लाग टूमैं औरु सरिया।

## चतुर्भुज शर्मा –

चतुर्भुज शर्मा जी का जन्म सन् 1910 ई0 में ग्राम बीहटबीरमपुर के निकट–ग्राम राजपुर खर्ग, जिला सीतापुर में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री गजोधर प्रसाद दीक्षित था। इण्टरमीडिएट की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने के बाद आपकी नियुक्ति गन्ना विभाग में सुपरवाइजर के पद पर हुई। आपको हिन्दी, संस्कृत के साथ–साथ उर्दू फारसी का भी अच्छा ज्ञान था। आप एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। आपकी सबसे बडी विशेषता यह थी कि आपको अपनी समस्त स्फुट रचनाएँ एवं काव्य कण्ठस्थ थे। आप जीवन भर गाँव की बोली में कविता लिखते रहे। आपने अपने काव्य में ग्राम्य–जीवन की झाँकी तथा प्रकृति की रम्यता का वर्णन प्रस्तुत किया है। आपका गोलोकवास 1998 ई0 में हुआ। आपने अवधी में जिन रचनाओं का सृजन किया, उसका विवरण इस प्रकार है–

''बजरंग विरुदावली, किसान की अरदास, कुत्ता–भेड़हा की लड़ाई, बाल–रामायण, ख्याल–प्याल, नहर का मुकदमा, सरदार पटेल, महात्मा गाँधी का निधन, स्वतन्त्रता दिवस, पोक्कन पाण्डे, गोधूली, धनुष यज्ञ, मेघनाद वध, मधई काका की चौपारि तथा यहिया खाँ आदि।''

## पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी 'रमई काका'–

'रमई काका' जी का जन्म 2 फरवरी 1915 ई0 में उन्नाव जनपद के रावतपुर ग्राम में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री वृन्दावन त्रिवेदी था, जो अंग्रेजी सेना में सिपाही थे तथा माता का नाम श्रीमती गंगा देवी था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा पड़ोस के ग्राम सिकन्दरपुर में पूरी हुई। आपने उन्नाव के अटल बिहारी हाईस्कूल (आज जो इण्टर कॉलेज है) से हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके उपरान्त आपको नियोजन विभाग में निरीक्षक का पद प्राप्त हुआ। इस कार्य के लिये आपको मसोधा, फैजाबाद जाना पड़ा। यहाँ प्रशिक्षण के दौरान ही आपने अनेक कविताएं लिखीं तथा नाटकों का लेखन और मंचन भी किया। प्रशिक्षण के बाद आपकी नियुक्ति बघीपुर के केंद्र में निरीक्षक के पद पर हुई। आपने गाँव में इतना सुधार किया कि आपको 'गवर्नर सर हेरी हेग' शील्ड प्रदान की गयी। अधिक परिश्रम के कारण आपको हृदय की धड़कन का रोग हो गया, इसलिये आकाशवाणी में कार्यक्रम के लिये आमन्त्रित किया गया। यहाँ आप एक कलाकार के पद पर नियुक्त हुए। कार्यक्रम में आप 'भूखन भइया' के नाम से भाग लेते थे। आप कवि सम्मेलनों में भी काफी सराहे गये। आपको हिन्दी मंचों के शीर्षस्थ कवि का सम्मान प्राप्त हुआ। अपनी लोकप्रियता के कारण आप दर्शनीय व्यक्ति बन गये। आपने कविता, नाटक और संगीत की साधना तो की ही, साथ ही चित्रकला और कुश्ती का भी आपको शौक था। आपका गोलोकवास 18 अप्रैल 1982 ई0 में हुआ। आपके पुत्र डॉ0 अरुण त्रिवेदी सीतापुर जनपद के आर0 एम0 पी0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय के हिन्दी विभाग से अवकाश प्राप्त कर वर्तमान में सीतापुर में निवास कर रहे हैं। आप लब्ध प्रतिष्ठ हिन्दी साहित्यकार हैं।

आपकी लगभग ग्यारह पुस्तकें प्रकाशित हुईं, जिनमें से आठ काव्य पुस्तकें तथा तीन नाटक एकांकी के संकलन हैं। आपकी काव्य पुस्तकें इस प्रकार हैं :–

''बौछार (1944 ई0), भिनसार (1946 ई0), नेताजी, (खण्डकाव्य–1948 ई0), फुहार (1958 ई0), हरपाती–तरवारि (1963 ई0), गुलछरा (1974 ई0), हास्य के छींटे (1978 ई0) तथा माटी के बोल (1981 ई0) आदि।''

अपनी काव्य–दृष्टि को 'रमई काका' ने अपनी तीन लघु कविताओं में स्पष्ट कर दिया है, जो 'भिनसार' काव्य संकलन में संग्रहित हैं–उसमें से एक 'अइसी कविता ते कोनु भला' इस प्रकार है।

हिरदय की कोमल पँखुरिन माँ,
जो भँवरा असि न गूँजि सकै।
उसरील बाँसहरियर ना करैं,
डभकत नयना ना पोंछि सकै।
जेहि के सुनतै खन बन्धन की,
बेड़ी झन–झन ना झन–झनायँ।
उन पाँवन मा पौरुखु न भरै,
जो अपने पथ पर डगमगायँ।
अंधियारु न दुरवै सविता बनि,
अइसी कविता ते कौनु लाभ ?

## डॉ0 श्याम सुन्दर मिश्र 'मधुप' –

'मधुप' जी का जन्म सन् 1922 ई0 में शरद पूर्णिमा के दिन ग्राम सरैया–मैनासी जिला–सीतापुर में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री छोटेलाल मिश्र तथा माता का नाम दुर्गा देवी था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा आपके ननिहाल भैंससरी जिला हरदोई में हुई। आपने 1940 ई0 में हाईस्कूल तथा 1947 ई0 में इण्टरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके उपरान्त आपने बी0ए0 1949ई0 में बी0ए0 ऑनर्स 1950 ई0 में लखनऊ विश्वविद्यालय से पूर्ण की। आपने एम0ए0 की परीक्षा 1956 ई0 में प्रथम श्रेणी में लखनऊ विश्वविद्यालय से ही उत्तीर्ण की। कवि पं0 उमाप्रसाद बाजपेई तथा कवि मुंशीलाल सिंह आपके साहित्यिक गुरु तथा प्रेरणा स्रोत थे। आपने अपने विद्यार्थी जीवन में अपना उपनाम 'मधुप' रखा। समस्त छात्र आपको इसी नाम से पुकारने लगे। आपका पहला छन्द 1940 ई0 में 'सुकवि' कविता का मासिक–पत्र, जो कानपुर से प्रकाशित होता था, उसके मार्च के अंक में प्रकाशित हुआ। वर्ष 1952 ई0 में आपने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय–सिधौली में नौकरी की। यहाँ आपकी नियुक्ति हिन्दी अध्यापक के पद पर हुई जहाँ 1955 ई0 तक आप कार्यरत रहे। कुछ वर्षों तक आप हरदोई के आर0आर0 कॉलेज में प्रवक्ता रहे। दिसम्बर 1965 ई0 में आपकी नियुक्ति आपके गृहनगर–सीतापुर के आर0एम0पी0 महाविद्यालय में प्रवक्ता के पद पर हुई। यहाँ आप क्रमशः प्रवक्ता, रीडर और हिन्दी विभागाध्यक्ष रहे। 30 जून 1986 ई0 को आप सेवानिवृत्त हो गये।

'अवधी में आपने जिन रचनाओं का सृजन किया, वह इस प्रकार है –'गाँव का सुरपुर देउ बनाइ', 'जागि रहे गाँधी केर सपन', 'खेतवन क देखि–देखि जिउ हुलसै मोर', 'घास के घरौंदे', बरवै–बौछार, 'अवधी काव्यधारा', 'अवधी का गाँधी वाङ्मय,' 'अवधी साहित्य का इतिहास', 'अवधी के समाजवादी साहित्य' आदि।

'घास के घरौंदे' नामक कृति आपकी श्रेष्ठ कृति है, जिसमें कवि ने राष्ट्रीयता एवं देश–प्रेम–भावना, प्रगतिशील–भावना, गीत–भावना, जीवन–दर्शन तथा ग्राम–प्रकृति–चित्रण का वर्णन किया है। ग्राम–प्रकृति के सन्दर्भ में आप कुछ चित्र इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं' –

कहूँ पर हरी दूब छतरानि,
कहूँ पर भादा की अठिलानि।
कहूँ पर झरुवा पइलति जाइ,
कहूँ सेउरा–मकरा हरियाइ।
कहूँ बेलझरा पाक पियरान,
बसइ गाँवइ मा हिन्दुस्तान।

## लवकुश दीक्षित–

आपका जन्म 13 जुलाई 1930 ई0 को राज्य कसमण्डा–लखनऊ में हुआ था। आपके पिता का नाम बलभद्र दीक्षित 'पढ़ीस' तथा माता का नाम श्रीमती इन्दिरा देवी दीक्षित था। आगे चल कर आपने सिधौली जनपद–सीतापुर में रह कर साहित्य की सेवा की।

आपने अवधी में 400 परम्परागत लोकगीत तथा 100 अवधी छन्दों की रचना की। 'दुर्गा सप्तशती' का अवधी भाषा में मन्त्रों सहित अनुवाद किया, साथ ही छह लम्बी कविताओं का सृजन भी किया। सीतापुर जनपद के अवधी साहित्य की सेवा में आपका नाम अविस्मरणीय है।

## आदित्य प्रकाश अवस्थी 'दिनेश दादा' –

आपका जन्म 24 जुलाई सन् 1973 ई0 में उपमन्युगोत्रीय पितामह श्री चन्द्रिका प्रसाद अवस्थी के घर ग्राम दउली, जिला सीतापुर में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री रामेश्वर दयाल अवस्थी तथा माता का नाम श्रीमती जगद्विनोदनी देवी था। आपने प्रारम्भिक शिक्षा प्राइमरी पाठशाला पाताबोझ में वर्नाक्यूलर मिडिल परीक्षा म्युनिस्पिल इण्टर कॉलेज 'हजारा' सीतापुर तथा हाईस्कूल की परीक्षा कृषक इण्टर कॉलेज–महोली से सम्पन्न की। नवम्बर 1958 ई0 में जिला परिषद के निर्देशन में शिक्षक के रूप में आपका पदस्थान हुआ तथा वर्ष 1998 ई0 में बेसिक शिक्षा विभाग से आप सेवानिवृत्त हो गये। आपने अवधी भाषा में जो साहित्य सृजन किया उसकी रचनाएँ इस प्रकार हैं –

'मन्थरा शोध काव्य', 'साहसी संदेसिहा', 'कसौटी', 'बैर–प्रीति', 'हठी राजा', 'फुटहा कुआँ', 'बलिदानी', 'बांकुरा', 'ठहाका', 'फटाका', 'व्यंग्य–विनोद', 'परिभाषा प्रमोद' तथा अवधी की देन आदि। आपकी कृति 'मन्थरा शोध काव्य' की कुछ पंक्तियाँ निम्नवत् हैं –

राम का तिलकु होई बात सुनि चौंकि परी,
केकई भई का मूढ़ ? रोषु मन्थरा का है।
जोरि के जमाति भारी तीरथ प्रयाग तीर,
आयी अगुवाई करै होसु मन्थरा का है।
दानवी अनीति पाले तच्छक कराल तिनइ,
भच्छन करै का उद्घोष मन्थरा का है।
साधि सखी भावुते हलाहल का घूँट गयी,
लोग बाग कहै लगे दोषु मन्थरा का है।

## डॉ0 गणेश दत्त सारस्वत –

आपका जन्म 10 सितम्बर 1936 ई0 में सीतापुर में हुआ था। आपके पिता का नाम स्व.उमादत्त सारस्वत था। सारस्वत जी आर0एम0पी0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सीतापुर में हिन्दी के विभागाध्यक्ष रहे। 'हिन्दी' सभा सीतापुर के अध्यक्ष पद पर रहते हुए आपने हिन्दी के विकास हेतु अभूतपूर्व प्रयास किया। सीतापुर जनपद में हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में आपका योगदान अविस्मरणीय है। सन् 2010 ई. में आपका स्वर्गवास हो गया। आपने अवधी भाषा में कविताओं की रचना की।

## देशवर्मा बाजपेयी :–

श्री देवशर्मा बाजपेयी का जन्म 1 अक्टूबर 1937 ई0 में गोमती नदी के तट पर स्थित ग्राम खानीपुर, पोस्ट गंगागंज, तहसील सिधौली, जनपद सीतापुर में हुआ था। बाद में आप अपने पैतृक स्थान ग्राम सरौरा, जनपद–सीतापुर में निवास करने लगे। आपके पिता का नाम श्री जयदयाल बाजपेयी था। आपकी माता का नाम श्रीमती गंगादेवी बाजपेयी था। वर्ष 1955 ई0 में इण्टरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण करने की तथा वर्ष 1958 ई0 में बी0ए0 की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् 1958 ई0 में आपकी नियुक्ति अस्थायी रूप से गन्ना विभाग में हुयी। इसके उपरान्त जिला विकास कार्यालय में एक लिपिक के पद पर आपकी नियुक्ति हो गयी। कुछ दिन आपने अध्यापन कार्य भी किया। इसके उपरान्त आप पुनः अपनी पुरानी सेवा में वापस आ गये। वर्ष 1979 ई0 में आप गृह जनपद सीतापुर स्थानान्तरित होकर आ गये। आपने अवधी में 'रामनामामृतम्'

नामक पुस्तक का सृजन किया है। प्रस्तुत काव्य संग्रह का प्रारम्भ वाणी वन्दना से करते हुए आपने राम–नाम की महिमा तथा राम के गुणों का वर्णन करते हुए अपने भावों को गति प्रदान की है।

**डॉ0 रमेश मंगल बाजपेयी–**

डॉ0 रमेश मंगल बाजपेयी का जन्म 25 जनवरी 1950 ई0 को हुआ था। पिता का नाम स्व.शान्तिधर बाजपेयी व माता का नाम सियादेवी बाजपेयी था। अवधी भाषा में आप द्वारा प्रणीत काव्यकृति 'श्री शिवचरित मानस' अवधी प्रबन्ध काव्यों के क्रम में एक उल्लेखनीय कृति है। यह दोहा–चौपाई छन्दों में विरचित भाव–प्रवण ग्रन्थ है जो कि रामचरित मानस का अनुकरण करते हुए सृजित किया गया है।

इसके अतिरिक्त सीतापुर जनपद के अवधी कवियों में चतुर्भुज शर्मा चन्द्र प्रकाश सिंह का नाम भी उल्लेखनीय है। सीतापुर के इन समस्त कवियों ने अवधी साहित्य के भण्डार को समृद्ध किया है। वर्तमान में भी अनेक कवि अवधी भाषा में काव्य सृजन में रत हैं।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –**


1. हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ – डॉ0 जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल
2. सीतापुर जनपद के कुछ हिन्दी गद्य साहित्यकारों का संक्षिप्त परिचय – नेतराम आर्य
3. रमई काका (व्यक्तित्व एवं रचनाकार)– डॉ0 अरूण त्रिवेदी
4. अवधी काव्य धारा – डॉ0 श्याम सुन्दर 'मिश्र मधुप'
5. सुजान (त्रैमासिक पत्रिका–पंचम अंक) – सुजान साहित्य परिषद सीतापुर से प्रकाशित
6. राम मड़इया–राष्ट्रकवि पं0 वंशीधर शुक्ल स्मारक एवं साहित्य प्रकाशन, लखीमपुर–खीरी
7. 'नागरी' – (वार्षिक पत्रिका बहराइच) कृष्ण स्वरूप पाण्डेय 'निर्बल'
8. मानस संगम – (अन्तर्राष्ट्रीय वार्षिक पत्रिका–कानपुर)– सम्पादक–मदन मोहन
9. अवध संस्कृति–विश्वकोश–2, डॉ0 सूर्य प्रसाद दीक्षित, वाणी प्रकाशन– 21ए, दरियागंज नयी दिल्ली
10. अवधी ग्रंथावली–खण्ड चारः आधुनिक साहित्य खंड–सम्पादक जगदीश पीयूष
11. 'विश्व में भारत' (23 मार्च 2001) सिधौली–सीतापुर (उ0प्र0) से प्रकाशित साप्ताहिक समाचार पत्र